20-7-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

पहले-2 तो समझाने वाला ही तीखा चाहिये। याद मे मस्त हो तो वाणी मे भी जौहर भरे। और चित्र जो है कि गीता का भगवान कृष्ण नही है शिव बाबा है। यह है क्लीयर पुआईन्टस समझाने की। दूसरी सीढी भी है। झाड और गोला तो है ही है। और शिव शंकर के भेद का भी होना चाहिये चित्र। बस यही चित्र काफी है। मुख्य चित्र हैं। राम राज्य रावण राज्य का भी चित्र हो। चित्रो पर अच्छी रीती समझाना चाहिये। भक्ति मार्ग के गुरू लोग जो कि भारतवासियो को डुबोते है उनसे भारतवासियों को छुडवाना चाहिये। तुम अच्छी रीती समझाओगे तो फिर वो आप ही सैन्टर खोलेंगे। समझाने वालो को योग नहीं होने से सर्विस जमती नही है। बाबा को तो ऐसा ही दिखाई देता है। बच्चे अच्छे चाहिये। याद की ही यात्रा मुख्य है जिसमे कि विकर्म नही होते है। आखे बहुत धोखा देने वाली है। मन भी अस्थी भी है नटखट। फिर ऐसा भी नही है कि कोई इसी समय सम्पूर्ण बन ही चुका हैं। निर्विकल्प कर्मातीत बन जावें तो फिर यह तो शरीर ही नही रहे। आत्मा भी यहां पर नही रहे। बाबा खुद कहते है कि अभी तो समय है। फिर भी योग तो अच्छा ही चाहिये। खामियाँ निकालनी चाहिये। ऐक्टिविटी तो अभी तक भी ऐसी है जैसे कि बंदर से भी बदतर। वो क्या सर्विस कर सकेंगे। पहले-2 तो सिद्ध करना है कि गीता का भगवान कौन है। साधु विद्वान आदि जो भी हैं कोई को भी पता नही है। उनको समझाने वाला तो चाहियेनां। वो तो सारा भक्ति मार्ग है। भक्ति मार्ग के शास्त्र पढते रहते है। अब हम बाप से ज्ञान ले रहे है तो भक्ति के धक्के नही खाते है। समझाने वाला तो ऐसा चाहिये जो कि सर्विस करके और सैन्टर जमा कर दिखावें। बाबा तो गांव आदि का भी अनुभवी है नां। अनुभव तो इनको हर बात का है। ऐसी कोई चीज नही है जो कि देखी नही होगी। हर चीज देखी है। सब अपने ही हाथ से खरीददारी करते थे। यह खुद भी समझाते हैं कि यह गांव का छोरा था। पांव में चप्पल भी नही, फिर वानप्रस्थ अवस्था मे शिव बाबा ने प्रवेश किया तो फिर वो ही गांव का छोरा विश्व का मालिक बनने जा रहा है। गांवडों से तो बहुत ही आये है। तुम बच्चों को तो सारा दिन ही बुद्धी में ज्ञान रहना चाहिये। तुम्हारा तो धन्धा ही यही होनाचाहिये। और जो भी धर्म आते है वो सभी है बाद पलाटस। तुम बच्चो को बाप ने बहुत अच्छा समझाया है। धन तो खत्म होना ही है तब। बाप ने तो फट से सारा धन दे दियां क्योंकि विनाश का साक्षात्कार किया था नां। विनाश देखा फिर राजधानी देखी तो स्मृती आई कि यह पैसे क्या करेंगे। बच्चे आदि भी सभी थे। साथ मे भी बहुत बच्चे आये। भूखे तो नही मरे नां। कोई तो नगें पांव भागे कोई तो साथ मे पैसे आदि ले भी आये थे। खर्चा होता रहा। आमदनी तो थी नही। बच्चो को पता है। कई पूछते भी है कि तुम कैसे भागे? भठी कैसे बनी? सो तो हंगामा होगा नां। और कोई की ताकत थोडेई है। बडे-2 लखपतियों की स्त्रीयां भाग आती थी। पार्टीशन भी पीछे हुआ था। तो गरीब भी साथ-2 मे खते ही आते है। शाहुकार देते है जिससे ही सभी चलता है। गरीब के पास पांच है और शाहुकार के पास लाख है तो भी दोनो का बराबर पद है। बाप तो गरीब निवाज है नां। तो गांव की सर्विस करना बहुत ही इजी है। चित्र तो बन ही रहे हैं। बहुत अच्छी सर्विस हो सकती है। हर एक गांव मे सैन्टर जमा सकते हो। चित्र भी तो हजारो ही चाहिये। घर मे भी जब कि मित्र सम्बन्धी आदि आवे तो बहुत सर्विस कर सकते हो। शाहुकारो मे भी अच्छी सर्विस हो सकती है। वहां सबेस सहज है सर्विस करना है। हर इतवार को श्मशान मे जा कर समझाओ कि यहां तो अकाले मृत्यु होती है वहां नही होती है। सर्विस तो बहुत है लेकिन करने वाले चाहिये। अभी तक भी दिल पसन्द सर्विस थोडेई करते है। याद ही की यात्रा मे जो तत्पर होगें उनको ही सर्विस का बहुत हुलास होगा। गिरते भी बहुत रहते है। अच्छे-2 बच्चो की भी नामरूप तरफ बुद्धी जाती है। क्रिमनल आई हो जाते है। कोई गन्दा क्रिमनल आई वाला आवे तो उनको तो थप्पड मार कर भगा देना होता है। वो शक्ति होनी चाहिये। अभी तो वो नशा चढा हुआ है। गुड नाईट बच्चो को बाप की। अब विदाई ओम